आज का पुरुषार्थ 15 April 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज पालनकर्ता की सीट पर बैठ अपने प्रजा की पालना करते चले "*

ज़रा गहराई से विचार करे, हम ज्ञान और योग के वल से अपनी **राजाई** स्थापित कर रहे है। इस नशे में स्थित हो जाये। केवल साधना हम अपने लिए नहीं कर रहे है, पर अपना **राज्य भी स्थापित कर रहे है।**

राज्य स्थापित कर रहे है तो हमें अपने समस्त प्रजा में वल भरते चलना है। बहुत इम्परटैन्ट बात है, यदि हम से प्रजा को बल ही प्राप्त नहीं होगा तो राजाई कैसे प्राप्त करेंगे?

तो .... " **मैं पूर्वज हूँ** "

इस स्मृति से और **योगयुक्त** रहकर हमें चारों और वायब्रेशन्स देकर अनेक आत्माओं में, जो हमारे राज्य में रहेंगी उनमें **पवित्रता का वल भरना है।** उन्हें मदद भी करनी है।

राजा का काम है, अपनी प्रजा को मदद करना। वैसे भी हमारा भी यहीं मुख्य काम है अपनी प्रजा को पूर्णतया मदद करते चले।

तो इस नशे में स्थित हो जाये .....

" हम अपना राज्य स्थापित कर रहे है .. तन, मन, धन से .. श्रीमत पर चलकर .. ज्ञान और योग के वल से "

राज्य स्थापित करने में जैसे हमें सबकी पालना करनी है, वैसे ही हमें यह भी ध्यान रखना है के ...

हमारे राज्य में अनेक विभिन्न तरह की आत्मायें होंगी। कोई बहुत ऊँच पद पायेगा, कोई छोटा। कोई साधारण काम करेंगे, कोई बड़े काम। लेकिन होंगे बहुत **सुखी, बहुत साहुकार, बहुत धनवान।**

तो अनेक आत्मायें होंगी जो **देवस्वरूप** भी होंगी। तो हमें सबके पुरुषार्थ को **साक्षी** होकर देखना है।

और दुसरी बात ... **हम राज्य स्थापित कर रहे है** तो बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इतिहास भी गवाह है कि अनेक बार अनेक मनुष्य को राज्य स्थापित करना पड़ा।

चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर बहुतों ने अपना राज्य स्थापित किया। तो कितना मेहनत की। कितना सहन करना पड़ा, बातें सुननी पड़ी। कितना आशा और निराशा का दौड़ चलता रहा।

लेकिन वो **हिम्मत नहीं हारे**, और अपने राज्य स्थापित कर दिया। जैसे कि **महात्मा गांधी** के नेतृत्व में संग्राम के कामयाब होने में कितनी मेहनत लगी, कितना साल लग गये, कितना सहन करना पड़ा।

तो जिनको राज्य स्थापित करने है वो घबड़ायेंगे नहीं। राज्य स्थापित करने वाले निर्वल नहीं हो सकते। हमें तो सिर्फ माया को युद्ध करके परास्त करना है। ताकि वो हमारे अधीनता स्वीकार कर ले।

यही वह मार्ग है, जिसमें अनेक लोग हार खाकर पीछे हट जाते है। जिसमें अनेक लोगों के जीवन में निराशा के अंधकार छा जाता है। जो हिम्मत हार जाते है। **अपने शक्तियों को भूल जाते है।**

लेकिन **हमें याद रखना है** कि .... इस युद्ध के मैदान में हमारा साथी और हमारा परम सदगुरू सर्वशक्तिमान है। उसका छत्रछाया होते हुए, उसका साथ होते हुए, उसके द्वारा दिये गये अस्त्र शस्त्र के होते हुए हम माया को अवश्य जीत लेगे।

माया हमें हरा नहीं सकती। हम माया से बहुत अधिक शक्तिशाली है। ऐसी स्मृतियों के साथ अपने शक्तियों को बढ़ाते चलेंगे।

और आज सारा दिन याद रखेंगे ...

" हम अपना राज्य स्थापित कर रहे है .. हम बहुत शक्तिशाली है .. हमारा परम सदगुरू छत्रछाया बनकर हमारे सिर के ऊपर स्थित है "

साथ में देखें ..

" मैं भी बहुत शक्तिशाली .. मास्टर सर्वशक्तिमान .. और सिर के ऊपर सर्वशक्तिमान की छत्रछाया है "

और सारा दिन ....

" अपनी प्रजा की पालना करते रहेंगे .. सबको शक्तियों के और पवित्रता के वायब्रेशन्स देते रहेंगे "

इस अभ्यास के द्वारा आज के सारे दिन को enjoy करते रहेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org